राज्य

# कार्ल मार्क्स

## मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत –

समान्य संबंधो और राज्य के विभिन्न रूपों को न तो अपने आप से और न ही मानव मन के तथाकथित समान्य विकास से समझा जाना चाहिए। लेकिन इनका आधार जीवन की भौतिक स्थितियों मे है। जैसे ही समाज के उत्पादक शक्तियों का विकास होता है (पुराना ऊर्जा का स्थान बेजान ऊर्जा ले लेती है – उदाहरण के तौर पर बैलो द्वारा खेतो के जुताई का स्थान ट्रेक्टरों से जुताई ने ले लिए) और उनका उत्पादन के वर्तमान संबंधो से टकराव होता है जो उनकी और अधिक वृद्धि में रुकावट बन जाता है। इस प्रकार सामाजिक क्रांति के युग का प्रारंभ होता है। उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधो के बीच यह विरोध समाज को वर्गों में विभाजित कर देता है। जैसे ही लोग इस संघर्ष के प्रति जागरूक होते है, व ~~लड़कर~~ लड़कर इसका सफाया कर देता है। इस संघर्ष का समाधान उत्पादक शक्तियों के बीच में पक्ष में होता है और नए

उत्पादन के उच्च संबंधों का उदय होता है जिनकी भौतिक परिस्थितियाँ पुराने समाज के गर्भ में परिपक्व होती है। बुर्जुआ (माध्यम वर्ग) की उत्पादन पद्धति न केवल बिल्कुल हाल के कई प्रगतिशील युगों का प्रतिनिधित्व करती है बल्कि वह उत्पादन का अंतिम विरोधी रूप है।

इस प्रकार मार्क्स के इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या उत्पादक शक्तियों की दृष्टि के संदर्भ में मानव इतिहास के क्रमान्वय विधा को स्पष्ट करती है। जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है, उत्पादक शक्तियों में उत्पादन के साधन (मशीनें, औजार और कारखाने) और मजदूरी सम्मिलित है। उत्पादन के संबंध समाज के उत्पादक स्तर के अनुरूप होते है। मार्क्स ने प्राचीन सामंतवादी और बुर्जुआ (माध्यमवर्गीय) उत्पादन के तरीकों के अतिरिक्त एशियाई उत्पादन विधी का भी उल्लेख किया गया है। मार्क्स एक ओर तो उत्पादन की शक्तियों तथा उत्पादन के संबंधों के बीच अंतर करता है वही दूसरी ओर वह आधार और ढाँचे के बीच भी अंतर करता है। मार्क्स की दृष्टि में उत्पादक शक्तियाँ वस्तुगत आर्थिक शक्तियाँ वही है जिन्हें अपने उदय या अस्तित्व के लिए मानवीय चेतना की आवश्यकता